ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

दलित उत्कर्ष में गॉधी के विचारों की प्रासांगिकता

डा0 शिव कुमार पासवान
पी–एच.डी., पी0डी0एफ0 (यू.जी.सी.)
ल0ना0मि0विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार

आज के मौजूदा समय में महात्मा गॉधी के समग्र विकास की परिकल्पना का औचित्य सही प्रतीत हो रहा है। आज 21वीं.सदी में दलित उत्कर्ष के लिए महात्मा गॉधी के विचार समाज और देश में लिए महत्वपूर्ण हो गये हैं। गॉधी जी ने दलित वर्ग के सहयोग सहायता तथा समर्थन में हर संभव प्रयास किया। विभिन्न समस्याओं से भरी जिस संसार में हम जी रहे हैं, हम जहॉ अलग–अलग मुद्दों के सामने चुनौतियों का समाधान करने की कोशिश कर रहे हैं।, उनमें मुख्य रूप से दलित उत्थान भी एक समस्या है। आज इस दौर में गॉधी के विचारों का मूल्य हमारे लिए और भी मूल्यवान हो गया है। आज इस दौर में गॉधी के विचारों का मूल्य हमारे लिए और भी मूल्यवान हो गया है।

गॉधी का राजनीतिक पटल पर आने के पहले छुआछूत भारतीय समाज में व्यापक पैमाने पर व्याप्त था। दलित अछूत समझे जाते थे। उनका आवास बाकी आबादी से अलग हटकर होता था और उनके पेशे को बहुत ही निम्न समझा जाता था। उनका भोजन उचित विकास की दृष्टि से बिल्कुल अपर्याप्त था और उनके पेशे को बहुत ही निम्न समझा जाता था। उनका भोजन उचित विकास की दृष्टि से बिल्कुल अपर्याप्त था और शैक्षणिक प्रगति बहुत धीमी थी। ये सब चीजें कुछ न कुछ आज के समाज में देखने को मिलती है। स्वतंत्र भारत में उनके सामाजिक – सांस्कृतिक निर्योग्यताओं को समाप्त कर दिया गया है, लेकिन इसका अवशेष अभी भी दिन–प्रतिदिन के सामाजिक जीवन में मौजूद है।[1]

गॉधी ने परिकल्पना की कि जातियों का कोई ऊॅच–नीच वर्गीकरण न हो और हर व्यक्ति का अपना आवंटित दर्जा हो। उन्होंने सफाई की अहमियत पर जोर दिया और अछूतों की इस पवित्र कार्य के लिए प्रशंसा की। गॉधी ने उन्हें खुद से प्रेम करने के लिए प्रेरित किया। उनके कार्य को समाज के लिए अहम बताया। उनके कार्य को त्याग का दर्जा दिया और समाज के लिए इस कार्य को करने की प्रशंसा की। गॉधी ने कहा कि ब्राह्म्ण तक को अपना मल स्वयं साफ करना चाहिए। लेकिन वह भूल गए कि असल मुद्दा तो वैश्विक सामाजिक व्यवहार का है ना कि व्यक्तिगत दृष्टिकोण का। यानी छुआछूत मिटाने

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

की जरूरत नहीं है बल्कि इस प्रणाली को बदलने की जरूरत है जिससे छुआछूत उत्पन्न हुई है।[2]

गॉधी ने कहा कि मैं फिर से जन्म लेना नहीं चाहता। लेकिन मेरा पुनर्जन्म हो ही तो मैं अछूत पैदा होना चाहूँगा ताकि मैं उनके दुखों, कष्टों और अपमानों का भागीदार बनकर स्वयं को और उन्हें इस दयनीय स्थिति से छुटकारा दिलाने का प्रयास कर सकूँ। इसलए मेरी प्रार्थना है कि यदि मेरा पुनर्जन्म हो तो ब्राह्म्ण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र के रूप में न हो बल्कि अतिशूद्र के रूप में हो। साथ ही उन्होंने कहा कि मैं अपनी पत्नी के साथ बंधन में बंधने से बहुत पहले ही मैं छूआछूत उन्मूलन के कार्य के साथ बंध गया था।

यदि हम भारत की जनसंख्या के पॉचवें हिस्से को सदा के लिए पराधीन रखना चाहें और उन्हें राष्ट्रीयता संस्कृति की उपलब्धियों से जान बूझकर वंचित रखे, तो स्वराज बेकार है। हम इन महान् शुद्धि आन्दोलन में भगवान की सहायता चाहते हैं, लेकिन उसकी सृष्टि के सर्वाधिक सुपात्र प्राणियों को मानवता के अधिकार देना नहीं चाहते। यदि हम स्वयं अमानवीय है तो दूसरों की अमानवीयता से मुक्ति पाने के लिए ईश्वर से याचना कैसे कर सकते हैं?

धर्म के पवित्र नाम पर मनुष्य को उत्पीड़ित करते जाना कट्टर हठधर्म के अलावा और कुछ नहीं है। हिन्दू धर्म के सुधार और उसके वास्तविक संरक्षण के लिए छूआछूत को मिटाना सबसे आवश्यक बात है। ''छूआछूत को मिटाना..... एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है। अगर छुआछूत कायम रहती है तो हिन्दू धर्म को खत्म हो जाना चाहिए। मैं तो यहॉ तक कहूँगा कि छुआछूत कायम रहने से हिन्दू धर्म का खत्म हो जाना अच्छा है।

छूआछूत से लड़ने और उस संघर्ष के लिए स्वयं को अर्पित करने में मेरी आकांक्षा मानवजाति के संपूर्ण पुनरूद्धार की है। लेकिन मेरे लिए मेरी यह आकांक्षा यथार्थ है, अतः यह स्वप्न नहीं है। रोमां रोलां के शब्दों में ''विजय लक्ष्य की प्राप्ति में नहीं, अपितु उसके लिए अथक प्रयास में निहित है।''[3]

गॉधी जी के अनुसार ''केवल अपना आचार रखने से कोई संस्कारवान नहीं बन सकता स्वयं जिसे गंदा काम मानते हो उसे करने को दुसरे को विवश होना पड़े इस प्रकार का व्यवहार संस्कारहीनता की निशानी है।[4]

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

गॉधी को यह विचार आज 21वीं सदी में भी प्रासंगिक प्रतीत होता है। क्योंकि आज हर वर्ग के लोग अपने घर की गन्दगी को स्वयं साफ कर रहा है जो दलित वर्ग के उत्कर्ष का एक मार्ग है, क्योंकि वह स्वतंत्र रूप से काम कर सकता है। गॉधी जी ने कहा कि मेरी यह दृढ़ मान्यता है कि अगर हमने अस्पृश्यता को दूर नहीं किया तो हिन्दू धर्म का नाश हो जाएगा। धर्म में द्वेष के लिए कोई जगह नहीं है हमें अपने दिल से द्वेषभाव निकाल देना चाहिए। जब अस्पृश्यता दूर हो जाएगी और हिन्दुओं के दिलों में द्वेष नहीं रहेगा तब तो दुसरे धर्मो के प्रति भी मेरे हृदय में आदरभाव होगा।[5]

पांडिचेरी में भाषण देते हुए उन्होंने कहा था, ''अस्पृश्यता निवारण के आन्दोलन में यदि चाहे तो भी सभी लोग भाग ले सकते हैं। यद्यपि आरंभ इसका उन सवर्ण हिन्दुओं के प्रायश्चित से होता है जिन्होंने कि धर्म के नाम पर इतने मनुष्यों को दबाकर या गुलाम बनाकर अन्याय किया है, पर हमारा अंतिम लक्ष्य तो इसके द्वारा विश्व बंधुता को प्राप्त करना है। संसार में सबसे पहले फ्रांस ने ही समानता और विश्वबंधुता के सिद्धांत का प्रचार किया था। यह फ्रांस के सुधार का दोष नहीं है कि खुद फ्रांसवालों ने भी अब तक उस महान सिद्धांत को अपने जीवन में नहीं उतारा। मौजूदा अस्पृश्यता आन्दोलन प्रत्येक व्यक्ति के हृदय से उसी समानता के लिए अपील करता है।[6] दलितों ने गॉधी जी से प्रभावित होकर शांति एवं अहिंसा का मार्ग अपना कर आन्दोलन किया।

भारत के लिए गांधी जी की आजादी की कल्पना में हिन्दू अनैतिकता तथा ब्रिटिश शासकों के लिए कोई स्थान नहीं था। उन्होंने 25 मई 1921 के यंग इंडिया में लिखा यदि हम भारत के पांचवे अंग को सतत गुलामी में रखते हैं तो स्वराज्य अर्थहीन है, यदि हम स्वयं अमानवीय रहेंगे तो भगवान के दरबार में हम दुसरों की अमानवीयता से छुटकारा के लिए कैसे याचना कर सकते हैं। अछूतों के प्रति गांधी का रूख साफ था और वह यह कि अस्पृश्यता को वह सहन नहीं कर सकते थे। सच तो यह है कि मनुष्यों के इस अमानीवय बहिष्कार से वह इतने व्यथित थे कि उन्होंने कहा – ''यदि मेरे सामने यह सिद्ध हो जाय कि अस्पृश्यता हिन्दू धर्म का आवश्यक अंग है तो मैं अपने को ऐसे धर्म के प्रति विद्रोही घोषित कर दूॅगा।'[7] परन्तु गांधी अन्य बहुसंख्यक जातियों को भड़काये बगैर छुआछूत को निशाना बनाने और सर्वाधिक गरीब लोगों को राष्ट्रीय आन्दोलन में शामिल करने की कोशिश कर रहे थे।[8]

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

ए. आर. दसाई के अनुसार राष्ट्रीय आन्दोलन ने जाति प्रथा को कमजोर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सत्याग्रह, संघर्ष, जनसभा लोक प्रदर्शन में भाग लेने से जाति विभेद कमजोर हुआ। वैसे 1921 के बाद सभी कांग्रेस अधिवेशनों में गांधी जी एवं अन्य कांग्रेसी नेताओं द्वारा अस्पृश्यता निवारण कार्यक्रम पर बल दिया गया तथा इसे सफल बनाने का हर संभव प्रयास किया गया।[9] गॉधी जी का प्रयास अहिंसात्मक था।

आज 21वीं सदी में दलित उत्कर्ष में हमें गांधी द्वारा कहे गये अहिंसात्मक विचार का फल देखने को मिलता है। उनके द्वारा चलाये गये अस्पृश्यता निवारण आन्दोलन बहुत हद तक सफल प्रतीत हो रहा है।

महात्मा गांधी के अनुसार चार विभाजन ही मौलिक, स्वाभाविक तथा आवश्यक है। असंख्य उपजातियां कभी–कभी सुविधाजनक है पर प्रायः वे अवरोधक सिद्ध होते हैं। इसका विलयन जितनी जल्दी हो जाय उतना ही अच्छा है। ऐतिहासिक तौर पर जाति व्यवस्था को भारतीय समाज की प्रयोगशाला में मनुष्य का प्रयोग या सामाजिक समंजन कहा जा सकता है। यदि हम इसे सफल साबित कर सके तो इसे संसार को उसकी काया पलटने, निर्मम लोलुप्ता तथा लालच से उत्पन्न होने वाले सामाजिक विघटन को रोकने के सर्वोत्तम साधन के रूप में पेश कर सकते हैं।[10]

आज भूमंडलीकरण के इस दौर में बाजार फैलत जा रहा है। समाज सिमटता जा रहा है। पूंजी की पकड़ मजबूत होती जा रही है और रिश्तों की पकड़ ढ़ीली पड़ती जा रही है तब गांधी और गांधी जनों की जरूरत महसूस हो रही है। ऐसे में गॉधी की राह चाहे जितनी कठिन हो पर वहीं एक राह बचती है।[11]

इस प्रकार, आज 21वीं सदी के इस युग में दलित साहित्य के साथ–साथ दलित वर्ग के गतिविधियों में काफी परिवर्तन आया है। गांधी जी के मानसिक और साहसिक एवं शारीरिक समर्पण भाव ने दलित समाज में एक गतिशीलता ला दिया है और समाज में समानता का दर्जा हासिल करने के लिए महात्मा गांधी की अहिंसात्मक विचार धारा महत्वपूर्ण हो गई है। आज हर राजनीतिक वर्ग के लिए दलित उत्थान एक मुद्दा हो गया है। भूमंडलीकरण के साथ सरकारी तंत्र में जो वैचारिक परिवर्तन आया है उसे समझना

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

जरूरी है। आज के दलित उत्कर्ष में भी गांधी के विचारों की प्रासंगिकता महसूस की जा रही है।

संदर्भ सूची :–

1 संजय कुमार, दलित उदभव एवं विकास, जानकी प्रकाशन, पटना, 2009, पृ.42
2 स्लैवोज जिजेक वर्कवेक, गॉधी बनाम अम्बेडकर एक अविरत संघर्ष, आउटलुक, दिल्ली अगस्त–सितम्बर 2012, पृ.24
3 आर के. प्रभु तथा यू. आर. राव द्वारा संपादित, महात्मा गॉधी विचार, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, 1994 पृ. 99–100
4 किशोर लाल मशरूवाला, गॉधी विचार दोहन, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, 1951, पृ.31
5. वियोगीहरि, बापू की ऐतिहासिक यात्रा, प्रकाशन विभाग भारत सरकार, वर्ष 2005, पृ. 02
6 वहीं, पृ. 43
7 लुई फिशर, गॉधी की कहानी, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष 2011, पृ0 53
8 इरफान हबीब, गॉधी जी (गॉधी एक पुनर्विचार), सहमत प्रकाशन वर्ष 2004, पृ. 37
9 कुमारी शिला सिंह, महात्मा गॉधी के रचनात्मक कार्यक्रमों में बिहारी महिलाओं का योगदान, वर्ष 1990, पृ. 145
10 डॉ. एम. के मिश्रा, डॉ0 कमल दधीज, गॉधी और दलित, अजफन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली वर्ष 2011, पृ0 32
11 मणिमाला का आलेख से. कादम्बिनी (मासिक पत्रिका) अक्टूबर 2012 नई दिल्ली, पृ0 16

Copyright © 2020 Authors